

---

# Shri Nilastotram

---

श्रीनीलस्तोत्रम् अथवा यन्द्रकृतं नीलनागराजस्तोत्रम्

---

## Document Information

---

Text title : nIlastotram

File name : nIlastotra.itx

Category : deities\_misc, nIlamatapurANA

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : Ankur Nagpal ankurnagpal108 at gmail.com

Proofread by : Ankur Nagpal, NA, PSA Easwaran

Source : Nilamata Purana Verses 442-460

Latest update : March 18, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीनीलस्तोत्रम् अथवा यन्द्रकृतं नीलनागराजस्तोत्रम्



॥ अथ श्रीनीलस्तोत्रम् ॥

यन्द्रदेव उवाच -

नमस्ते नागराजेन्द्र नील नीलोत्पलधृते ।

नीलमेघययप्रेक्ष नीलतोलकृतालय ॥ १ ॥

कृष्णानां त्वं शतैर्नाग शैलसे समभिः सदा ।

सप्तसप्तिरिवास्मिन्नाजसे त्वं गभस्तिभिः ॥ २ ॥

त्वं नील नीलम विनीतपापैर्द्वेषेण देवैरपि नेक्ष्यसे त्वम् ।

नागेन्द्र भोगीन्द्र ध्रुवाम्बरस्थो ध्यानेन् विद्मद्भिरपीडमानः ॥ ३ ॥

त्वं नील योगेश ध्रुवासनस्थो वेदार्थविद्भिरिविधैर्विधानैः ।

संसारकार्येषु सुरायकृद्भिराराध्यसे भोक्षकृलाय विप्रैः ॥ ४ ॥

नागेश नीलार्थिरिवामरेशैर्विज्ञायसे सूर्य ध्रुवाम्बरस्थः ।

त्वं नील नीलार्थिरिवोज्ज्वलश्च सुभक्तकार्याणि विधास्यमानः ॥ ५ ॥

दृष्टो मया कारणमेव देव भूमिसकाशात्पतता बलेन ।

स्मृतोर्चितो मोचय मेऽतिदुःखात्त्रायस्व मां भोगिपते नमस्ते ॥ ६ ॥

त्वं नील नीलशैलप्रकाशो विराजसे विष्णुशिवामरेशः ।

विधिर्विधाता रमसे कृष्णीश त्वां वासुदेवं प्रणतोऽमि नित्यम् ॥ ७ ॥

त्वां नीलनीलाम्बर नीलनत्रमाकाशवत्सर्वगतं सुरेशम् ।

ध्यायन्नरो योऽप्यजितेन्द्रियो वा नागेन्द्र मुच्येत तव प्रसादात् ॥ ८ ॥

नील त्वामेव वेदार्थे जगुर्वेदाः सनातनम् ।

देवं बहु मुमुक्षूणां कामिनां चार्तसाधनम् ॥ ९ ॥

त्वत्प्रकाशं यतो ब्रह्म निर्मलं निष्कलं परम् ।

सुकृमतो व्योमनिर्दिष्टं सर्वगात्रैरकृत्रिमम् ॥ १० ॥

अकिंचनो वदान्यस्त्वमति सूक्ष्मोऽसि य पृथुः ।  
अर्थाश्रयो मહार्थस्त्वं स्तव्यस्तस्याकशरस्य य ॥ ११ ॥

कुट्टः पुत्र सलश्रेण नागराजेन्द्रशोभिता ।  
त्वया तु राजतेऽत्यर्थं विष्णुनैवादितिर्यथा ॥ १२ ॥

त्वमेव तपसाऽत्यर्थं तथा विद्योतसे प्रभो ।  
तोयं डिमं शीकरांश्च तथा मुञ्चसि धार्मिक ॥ १३ ॥

प्रजापतिः कश्यपो हि सर्वभूतपिता प्रभुः ।  
त्वया तु शोभतेऽत्यर्थं पुत्रोऽप्यन्तधार्मिकः ॥ १४ ॥

त्वयि धर्मश्च सत्यं य कशमा य सततं प्रभो ।  
देवासुरविमर्देषु शतशोऽथ सलस्रशः ॥ १५ ॥

त्वया विनिहता दैत्या देवब्राह्मणकण्टकाः ।  
वरदस्त्वं वरेण्यश्च भवारिर्भलला विभुः ॥ १६ ॥

भक्तानुकम्पी भक्तश्च देव देवे जनार्दने ।  
तस्यातिदयितश्चासि यथा नागः स वासुकिः ॥ १७ ॥

धनदस्ते सभा नाग यथा शर्वस्य नित्यदा ।  
धनदश्चासि भक्तानां धनेश इति विश्रुतः ॥ १८ ॥

नागानां त्वं गतिर्नित्यं देवानामिव वासवः ।  
भक्तिमानस्मि ते नित्यं त्वं य जनासि धार्मिक ॥ १९ ॥

॥ इति श्रीनीलमतपुराणे नीलस्तोत्रम् अथवा यन्द्रकृतं नीलनागराजस्तोत्रम्  
सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Ankur Nagpal ankurnagpal108 at gmail.com  
NA, PSA Easwaran

---



*Shri Nilastotram*

pdf was typeset on December 22, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

